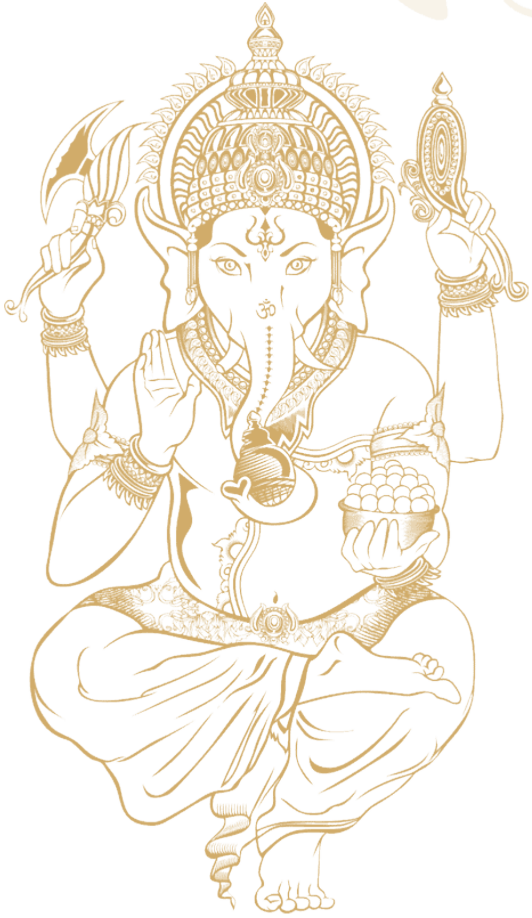

Divit

23 Jan 2026

01:49 PM

Delhi

Model: Baby-Horoscope

Order No: 121412201

तिथि 23/01/2026 **समय** 13:49:00 **वार** शुक्रवार **स्थान** Delhi **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:23
अक्षांश 28:39:00 उत्तर **रेखांश** 77:13:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:21:08 घंटे

पंचांग		अवकहड़ा चक्र	
साम्पातिक काल	21:38:37 घं	गण	मनुष्य
वेलान्तर	00:11:47 घं	योनि	सिंह
सूर्योदय	07:13:32 घं	नाड़ी	आद्य
सूर्यास्त	17:52:42 घं	वर्ण	विप्र
चैत्रादि संवत	2082	वश्य	जलचर
शक संवत	1947	वर्ग	सर्प
मास	माघ	युँजा	अन्त्य
पक्ष	शुक्ल	हंसक	जल
तिथि	5	जन्म नामाक्षर	दी-दीपांकर
नक्षत्र	पू०भाद्रपद	पाया(रा.-न.)	स्वर्ण-लौह
योग	परिघ	होरा	सूर्य
करण	बव	चौघड़िया	शुभ

विंशोत्तरी		योगिनी	
गुरु 0वर्ष 5मा 26दि		भ्रामरी 0वर्ष 1मा 14दि	
गुरु		भ्रामरी	
	23/01/2026		23/01/2026
	21/07/2026		09/03/2026
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		00/00/0000
	23/01/2026		23/01/2026
राहु	21/07/2026	धान्या	09/03/2026

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			14:45:23	वृष	रोहिणी	2	चंद्र	गुरु	---	0:00			
सूर्य			09:06:33	मक	उत्तराषाढ़ा	4	सूर्य	शुक्र	शत्रु राशि	1.57	मातृ	पितृ	साधक
चंद्र			02:55:33	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	राहु	सम राशि	1.21	कलत्र	मातृ	जन्म
मंगल		अ	05:44:45	मक	उत्तराषाढ़ा	3	सूर्य	बुध	उच्च राशि	1.06	पुत्र	भ्रातृ	साधक
बुध		अ	10:14:27	मक	श्रवण	1	चंद्र	चंद्र	सम राशि	0.94	भ्रातृ	ज्ञाति	वध
गुरु	व		24:10:13	मिथु	पुनर्वसु	2	गुरु	बुध	शत्रु राशि	1.33	आत्मा	धन	जन्म
शुक्र		अ	13:05:19	मक	श्रवण	1	चंद्र	राहु	मित्र राशि	1.08	अमात्य	कलत्र	वध
शनि			03:36:19	मीन	उ०भाद्रपद	1	शनि	शनि	सम राशि	0.97	ज्ञाति	आयु	सम्पत
राहु			15:08:26	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	केतु	मित्र राशि		---	ज्ञान	अतिमित्र
केतु			15:08:26	सिंह	पू०फाल्गुनी	1	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	प्रत्यारि

लग्न-चलित

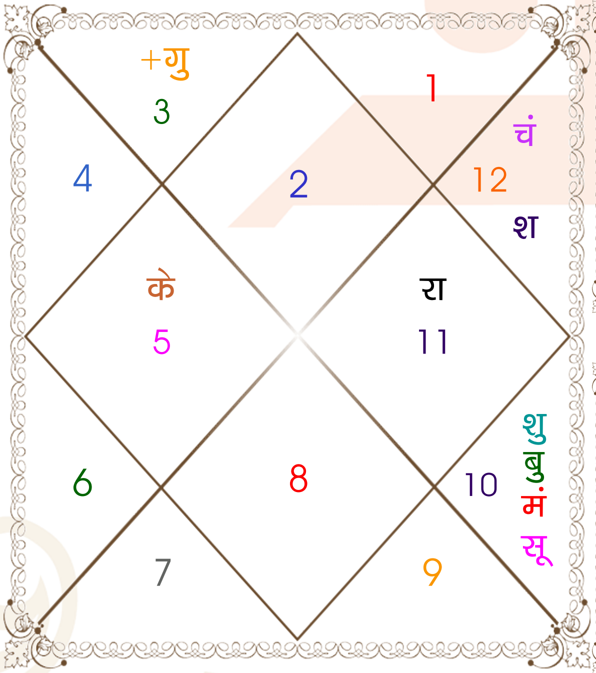

चन्द्र कुंडली

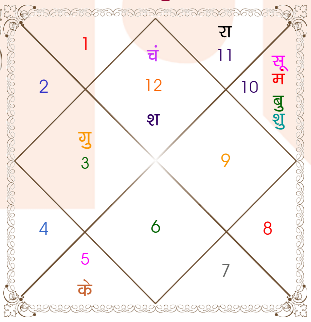

नवमांश कुंडली

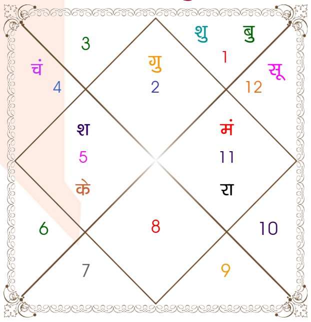

सर्वाष्टकवर्ग

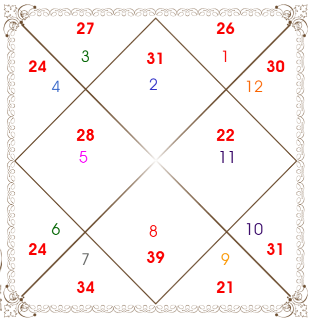

दशमांश कुंडली

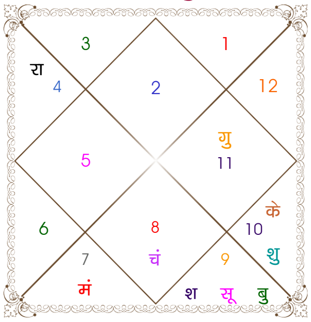

नक्षत्रफल

आपका जन्म पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के चतुर्थ चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि मीन तथा राशि स्वामी वृहस्पति होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण विप्र, वर्ग सर्प, योनि सिंह, नाड़ी आद्य तथा गण मनुष्य होगा। नक्षत्र के चतुर्थ चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथमाक्षर "दि" या "दी" अक्षर से होगा यथा- दिनेश कुमार, दीनानाथ आदि।

आप एक संयमी पुरूष होंगे एवं इन्द्रियों पर नियंत्रण करने में पूर्ण रूप से सफल रहेंगे। विभिन्न प्रकार की कलाओं को सम्पन्न करने एवं कार्यों को करने में आप हमेशा दक्ष रहेंगे। अतः सभी सामाजिक लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे एवं आपको यथोचित सम्मान एवं आदर प्रदान करेंगे। शत्रुओं को पराजित करने में भी आपको सफलता प्राप्त होगी तथा शत्रुवर्ग आपसे प्रायः भयग्रस्त एवं प्रभावित रहेगा एवं आपका विरोध करने में सर्वथा असमर्थ रहेगा। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे एवं अपने सभी सांसारिक कार्यों को बुद्धिमतापूर्ण ढंग से सम्पन्न करेंगे। अतः आप हमेशा आत्म संतुष्टि को प्राप्त करके प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे।

जितेन्द्रियः सर्वकलासु दक्षो जितारिपक्षः खलु यस्य नित्यम्।
भवेन्मनीषा सुतरामपूर्वा पूर्वादिका भाद्रपदा प्रसूतौ।।
जातकाभरणम्

अर्थात् पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र में उत्पन्न जातक जितेन्द्रिय, समस्त कलाओं में निपुण, शत्रुपक्ष को जीतने वाला तथा बुद्धिमान होता है।

कभी कभी आप मानसिक रूप से चिन्तित एवं व्याकुल रहकर कष्टानुभूति भी प्राप्त करेंगे। साथ ही स्त्री से आप पूर्ण रूप से पराजित रहकर उसके वश में रहेंगे तथा समस्त सांसारिक कार्यों को उसी के कथनानुसार या निर्देशानुसार सम्पन्न करेंगे। धनैश्वर्य से आप प्रायः सुशोभित रहेंगे एवं जीवन में सुखपूर्वक इसका उपभोग करेंगे। लेकिन आप में कृपणता का भाव भी विद्यमान रहेगा। अतः समय समय पर लोगों को आपके द्वारा परेशानी भी होगी। परन्तु आप में चतुराई एवं विद्वता का गुण भी विद्यमान रहेगा अतः सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे।

भाद्रपदासूद्विग्नः स्त्रीजितधनी पटुरदाता च।।
बृहज्जातकम्

अर्थात् पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य हृदय से दुःखी, स्त्री के वश में रहने वाला, धनवान चतुर पीड़ित तथा कृपण स्वभाव का होता है।

आप हमेशा साहस युक्त ओजस्वी वाणी का प्रयोग करेंगे जिससे सभी लोग आपसे प्रसन्न तथा प्रभावित रहेंगे एवं आपके प्रभुत्व को भी स्वीकार करेंगे। साथ ही आप स्वभाव से ही भययुक्त प्रकृति से भी युक्त रहेंगे एवं जीवन में अनावश्यक रूप से भय से भी त्रस्त रहेंगे। इसके अतिरिक्त समाज में सभी लोगों से आपके संबंध स्नेह एवं मधुरता से पूर्ण रहेंगे।

पूर्वप्रोष्ठपदि प्रगल्भवचनो धूर्तोभयार्तो मृदुः।।
जातक परिजातः

अर्थात् पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में पैदा होने वाला पुरूष साहस एवं ओजस्वी वाणी बोलने वाला, धूर्त, भय से व्याकुलता प्राप्त करने वाला तथा मृदुस्वभाव का होता है।

भाषण देने की कला में आप अत्यन्त ही दक्ष रहेंगे एवं अपने ओजस्वी वक्तव्यों से सभी सामाजिक जनों को पूर्ण रूप से प्रभावित करेंगे। आपका जीवन सामान्य रूप से सुख पूर्वक व्यतीत होगा एवं आवश्यक सुखसंसाधनों से आप सुसम्पन्न रहेंगे। आप परिवार से युक्त रहकर समाज में सर्वत्र मान सम्मान अर्जित करेंगे। लेकिन आप को नींद अधिक मात्रा में आएगी। अतः आलस्य की आप में प्रबलता होने से कई बार आप निष्क्रिय से हो जाएंगे तथा किसी भी कार्य को सम्पन्न करने में अपने आपको असमर्थ समझेंगे।

वक्ता सुखीप्रजायुक्तो बहुनिद्रोनिरर्थकः।
पूर्वभाद्रपदायां च जातो भवति मानवः।।
मानसागरी

अर्थात् पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र में उत्पन्न जातक श्रेष्ठ वक्ता, सुखी, सम्मान वाला, अधिक नींद वाला तथा स्वयं किसी कार्य के योग्य नहीं होता है।

आप स्वर्ण पाद में उत्पन्न हुए हैं। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने के कारण जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते है। इस से उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा प्रायः धनाभाव से भी दुःखी रहता है। साथ ही जीवन में सुख संसाधनों से भी हीन रहता है तथा सांसारिक कार्यों में अल्प मात्रा में सफलता प्राप्त होती है जिससे मन में तनाव आदि विद्य मान रहता है। इसके अतिरिक्त जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उसे अत्यधिक परिश्रम के द्वारा अल्प सफलता अर्जित होती है। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में शुभ राशि में स्थित है। अतः आपके लिए यह स्वर्ण पाद अधिकांश शुभ फल ही प्रदान करेगा। अतः आप जीवन में समस्त सुख संसाधनों वैभव ऐश्वर्य एवं धनादि से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में पर्याप्त मात्रा में धनार्जन करके समाज में एक धनाढ्य पुरूष के रूप में प्रख्यात रहेंगे। समाज में आप एक सम्माननीय व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। साथ ही वाहनादि सुखों से भी आप युक्त रहेंगे एवं जीवन में प्रसन्नतापूर्वक इसका उपभोग करेंगे। आप सद्गुणों से सर्वथा सम्पन्न रहेंगे। आपकी पत्नी भी सुन्दर सुशील एवं गुणवान होगी तथा आपके सेवकगण भी ईमानदार रहेंगे। साथ ही आप के लाभ मार्ग भी हमेशा प्रशस्त रहेंगे। आप दीर्घायु होंगे एवं शारीरिक कान्ति भी दर्शनीय रहेंगी। इसके अतिरिक्त पुत्रादि का भी आप पूर्ण रूप से सुख प्राप्त करेंगे।

मीन राशि में उत्पन्न होने के कारण आपका शारीरिक स्वरूप सुन्दर एवं आकर्षक होगा। आपका मस्तक विशालता से युक्त तथा नासिका उन्नत रहेगी। आपकी आखें भी सुन्दर एवं आकर्षक रहेंगी तथा शरीर के सभी अंग सुन्दर एवं सुडौल रहेंगे। आपका कटिभाग

पतला होगा। शिल्प शास्त्र में आप विशेष रूप से रूचिशील रहेंगे तणा कई क्षेत्र में विशेष योग्यता प्राप्त करके यश भी अर्जित करेंगे। शत्रुओं को पराजित करने में आप हमेशा समर्थ रहेंगे तथा शत्रुवर्ग आपसे सर्वदा भयभीत एवं प्रभावित रहेंगे एवं आपका विरोध करने में सर्वदा असमर्थ रहेंगे। आप विविध प्रकार के शास्त्रों का परिश्रम पूर्वक ड़ानार्जन करेंगे एवं एक विद्वान के रूप में समाज में प्रतिष्ठा अर्जित करेंगे। संगीत शास्त्र में भी आपकी स्वभाविक रूचि रहेगी एवं इसका आपको अच्छा ड़ान रहेगा। आपकी प्रवृति धार्मिकता से युक्त रहेगी एवं समस्त धार्मिक कृत्यों का आप नियमपूर्वक पालन करने के लिए जीवन में सर्वदा तत्पर रहेंगे। स्त्री वर्ग में भी आप लोकप्रिय रहेंगे। साथ ही आप की वाणी अत्यन्त ही मधुर होगी जिससे अन्य लोग आपसे नित्य प्रभावित रहेंगे। आप जीवन में आवश्यक सुख संसाधनों से युक्त रहकर उनका प्रसन्नतापूर्वक उपभोग करेंगे। क्रोध की आप में प्रायः अल्पता रहेगी। आप राजकीय सेवा करने में भी तत्पर रहेंगे एवं राज्य से लाभ प्राप्त करेंगे। स्त्री के आप हमेशा वश में रहेंगे एवं अधिकांश कार्यो को उसी के कथनानुसार सम्पन्न करेंगे। आप अच्छे स्वभाव के व्यक्ति होंगे एवं अन्य जनों से आपके स्नेह पूर्ण सम्बन्ध रहेंगे। साथ ही समुद्री जहाज में यात्रा करने या नाव आदि में सैर करने में आपको हार्दिक प्रसन्नता की अनुभूति होगी। इसके अतिरिक्त आप दानशीलता के भाव से भी युक्त रहेंगे एवं यथाशक्ति इस प्रवृति का जीवन में अनुपालन करते रहेंगे।

शिल्पोत्पन्नाधिकरोऽहितजयनिपुणः शास्त्रविच्चारूदेहो।
गेयज्ञो धर्मनिष्ठो बहुयुवतिरतः सौख्यभाक् भूपसेवी।।
ईष्टत्कोपो महत्कः सुखनिधिधनभाक् स्त्रीजितः सत्स्वभावो।
यानासक्तः समुद्रे तिमियुगलगते शीतगौ दानशीलः।।
सारावली

आप जल या समुद्र में पाए जाने वाले मोती, शंख आदि रत्नों से भी लाभ अर्जित कर सकेंगे। साथ ही जीवन में आप किसी अन्य व्यक्ति, मित्र या संबंधी के धन का भी सुखपूर्वक उपभोग करने वाले होंगे। स्त्रियोंचित वस्त्रों के प्रति भी आपके मन में प्रवल आसक्ति का भाव रहेगा। इसके अतिरिक्त आपका शारीरिक कद मध्यम रहेगा।

जलपरधनभोक्ता दारवासोऽनुरक्तः।
समरूचिरशरीरस्तुङ्गनासो बृहत्कः।।
अभिभवति सपत्नान् स्त्रीजितश्चारूदृष्टिः।
द्युतिनिधि धनभोगी पंडितश्चान्त्यराशौ।।
बृहज्जातकम्

आप दिन में कई बार जल पीने की इच्छा प्रदर्शित करेंगे। आप का अपनी पत्नी पर पूर्ण विश्वास रहेगा तथा उससे पूर्ण रूप से प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। आप एक उच्च कोटि के विद्वान भी रहेंगे एवं कृतड़ता के सद्गुण से युक्त रहेंगे। आप अन्य जनों के उपकार को स्वीकार करके उनका हार्दिक आभार प्रकट करेंगे। आपके इन सद्गुणों से प्रभावित होकर अन्य लोग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप एक भाग्यशाली पुरूष होंगे एवं भाग्यबल से ही जीवन में कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता प्राप्त कर सकेंगे।

अत्यम्बुपानः समचारुदेहः स्वदारगस्तोयजवित्तभोक्ता।
विद्वान्कृतज्ञो ळमिभवत्यळमित्रान् शुभेक्षणो भाग्ययुतोळन्त्यराशौ।।
फलदीपिका

आप एक संयमी पुरुष होंगे तथा इन्द्रियों को वश में करने में पूर्ण रूप से सफल होंगे तथा संयमपूर्वक सम्पूर्ण जीवन व्यतीत करेंगे। साथ ही कई प्रकार के सद्गुणों से भी आप सम्पन्न रहेंगे। आप एक चतुर एवं बुद्धिमान पुरुष भी होंगे तथा चतुराई से अपने कार्यों को सिद्ध करते रहेंगे। जल क्रीड़ा करने में आप अत्यन्त ही रुचिशील रहेंगे एवं इससे अत्यन्त ही आनन्द की अनुभूति करेंगे। आपकी बुद्धि निर्मल रहेगी तथा किसी भी प्रकार के छल प्रपंच आदि की भावनाओं का आप में अभाव रहेगा।

शशिनि मीनगते विजितेन्द्रियो बहुगुणः कुशलो जललालसः।
विमलधीः किल शस्त्रकलादरस्त्व बलताबलताकलितो नरः।।
जातकाभरणम्

आप प्रायः उदर पोषण में ही अपना अधिकांश समय व्यतीत करेंगे एवं कभी कभी आप के लाभमार्ग भी अवरुद्ध होंगे। आपकी शारीरिक कान्ति अत्यन्त ही सुन्दर एवं आकर्षक रहेगी जिससे आपका सौन्दर्य तथा व्यक्तित्व में निखार आएगा। पिता के धन से आप सम्पन्न रहेंगे तथा जीवन में सुखपूर्वक इसका उपभोग करेंगे। आप एक साहसी पुरुष होंगे तथा साहसिक कार्यों को करने के लिए हमेशा उद्यत रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपकी सन्तोषी प्रवृति रहेगी तथा जो कुछ उपलब्ध हो उसी में सन्तोषानुभूति करके प्रसन्न रहेंगे।

जलचरधनभोक्ता मोहयुक्तोळप्रशस्तः।
उदरभरणदेहस्तुङ्गमांसो ड्ध्यः।।
अभिलषति सपत्नी स्त्रीजितश्च चारुकान्तिः।
पितृधनजनभोगी पीडितो मीनराशिः।
तुष्टः साहसी क्रोधयुक्तः मीनराशिर्मनुष्यः।।
जातकदीपिका

आप गम्भीर प्रवृति से युक्त व्यक्ति होंगे तथा शौर्यादि गुणों से सर्वदा सम्पन्न रहेंगे। समाज में आपका पूर्ण प्रभुत्व भी स्थापित रहेगा एवं लोग आपको प्रधान की तरह आदर प्रदान करेंगे। लेकिन आप में कृपणता का भाव भी रहेगा। अतः धन संचय में प्रवृति होने के कारण कई लोग आपसे कभी कभी परेशानी की भी अनूभूति करेंगे। आप गुणवान व्यक्ति होंगे तथा कुल में आप प्रिय एवं श्रेष्ठ समझे जाएंगे। आपको सेवा करना रुचिकर लगेगा। अतः सेवा कार्यों में भी आप तत्पर रहेंगे। आप तेज चलना पसन्द करेंगे। आपका चाल चलन भी श्रेष्ठ रहेगा तथा बन्धुजनों से पूर्ण स्नेह एवं समाज से परिपूर्ण रहेंगे।

गम्भीरचेष्टितः शूरः पटुवाक्यो नरोत्तमः।
कोपनः कृपणो ज्ञानी गुणश्रेष्ठः कुल प्रियः।।
नित्यसेवी शीघ्रगामी गाधंर्वकुशलः शुभः।।

मीन राशौ समुत्पन्नौ जायते बन्धुवत्सलः।।
मानसागरी

आप अत्यन्त ही आकर्षक व्यक्तित्व के पुरूष होंगे एवं विविध प्रकार के शास्त्रों का आपको विस्तृत ज्ञान रहेगा। साथ ही समाज में अन्य महिलाओं से भी आपके मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित रहेंगे।

मीनस्थे मृगलाञ्छने वरतनुर्विद्वान बहुस्त्रीपतिः।।
जातक परिजातः

मनुष्य गण में उत्पन्न होने के कारण आपकी प्रवृति धार्मिक रहेगी एवं देवता तथा ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा एवं सेवा का भाव विद्यमान रहेगा परन्तु कभी कभी आप स्वभाव से अभिमान का भी प्रदर्शन करेंगे। आपके मन में दया एवं करूणा की भावना भी रहेगी एवं जीवन में अवसरानुकूल आप अपनी इस प्रवृति का पालन करने में तत्पर रहेंगे। आप एक बलशाली पुरुष होंगे एवं अपने अधिकांश कार्यो को अपने बल पर ही सम्पन्न करेंगे। आप कई प्रकार की कलाओं तथा कार्यो को भी जानने वाले होंगे एवं निपुणता से इनको सम्पन्न भी करेंगे। इससे आप समाज में सम्मानीय तथा ख्याति प्राप्त रहेंगे। साथ ही आपकी शारीरिक कान्ति भी दर्शनीय रहेगी। इसके अतिरिक्त अपने परिवार के साथ ही आप कई अन्य लोगों का भी पालन करेंगे एवं उन्हें सुख प्रदान करेंगे।

समाज में आप हमेशा एक सम्मानीय तथा आदरणीय पुरुष होंगे तथा धन सम्पत्ति से सर्वदा सुसम्पन्न रहकर प्रसन्नतापूर्वक उसका उपभोग करेंगे। आपके नेत्र विशालाकृति के होंगे एवं निशाने बाजी की कला में आप विशेष रूचिशील एवं सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त सभी लोग आपकी आज्ञा का पालन भी करेंगे। अतः आप समाज में किसी प्रतिष्ठित पद पर आसीन रहेंगे।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

सिंह योनि में जन्म होने के कारण आप पूर्ण रूपेण धार्मिक प्रवृति से युक्त रहेंगे तथा सभी धार्मिक क्रियाओं का अनुपालन करने में सर्वदा तत्पर रहेंगे। अच्छे कार्यो को करने में आप हमेशा रूचिशील दौरान आपकी- सत्कार्यो से अन्य लोग भी लाभान्वित होंगे। इस प्रकार अपने सद्गुणों एवं सतकार्यो से समाज में आप एक आदरणीय तथा ख्याति प्राप्त व्यक्ति रहेंगे। साथ ही विभिन्न प्रकार के सत्वगुणों से भी आप सम्पन्न रहेंगे एवं नियमपूर्वक इनका अनुपालन भी करते रहेंगे। इसके साथ ही कुल या परिवार की उन्नति या समृद्धि में आपका

विशेष योगदान रहेगा। अतः सभी परिवारिक जनों में आप प्रिय तथा श्रेष्ठ समझे जाएंगे।

स्वधर्मे तु सदाचारसत्क्रियासद्गुणान्वितः।
कुटुम्बस्य समुद्धर्ता सिंहयोनिभवो नरः।।
मानसागरी

अर्थात् सिंहयोनि में उत्पन्न जातक अपने धर्म में सच्चा आचार-व्यवहार वाला, अच्छी क्रिया एवं अच्छे गुणों से सम्पन्न और परिवार का उद्धार करता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति एकादश भाव में है। अतः माता के आप सदैव प्रिय रहेंगे एवं आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य तथा स्नेह का भाव विद्यमान रहेंगे। जीवन में आपकी उन्नति एवं समृद्धि के लिए सदैव आपको अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करती रहेंगी। साथ ही उन्हीं के सहयोग से आप अपने आय साधनों की वृद्धि करने में सफल हो सकेंगे। इस प्रकार जीवन के समस्त महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपको माता का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही मातृपक्ष से भी आपको नित्य धन लाभ होता रहेगा।

आपके मन में भी उनके प्रति हार्दिक श्रद्धा का भाव रहेगा तथा उनकी आज्ञा पालन करना एवं उनकी सेवा करना आप अपना प्रिय कर्तव्य समझेंगे। आपके परस्पर संबंध अत्यन्त ही स्नेहपूर्ण रहेंगे एवं उनमें मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। इस प्रकार आप परस्पर एक दूसरे के लिए शुभ रहेंगे।

आपके जन्म काल में सूर्य नवम भाव में स्थित है अतः आप पिता के स्नेह पात्र होंगे। उनका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। जीवन में धन सम्पत्ति से सर्वदा युक्त रहेंगे एवं समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आपके भाग्योदय संबंधी कार्यों में भी उनकी आपके लिए पूर्ण प्रेरणा तथा सहयोग का भाव रहेगा।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगे एवं उनकी आज्ञा पालन तथा सेवा करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद उत्पन्न होने के कारण इनमें अल्प मात्रा में तनाव या कटुता का समावेश का आभास होगा जो कुछ समयोपरान्त स्वतः ही समाप्त हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी हार्दिक सहायता करेंगे एवं सुख दुःख में उनको पूर्ण वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से अपना सहयोग प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर रहेंगे।

आपके जन्म समय में मंगल नवम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। आपके प्रति उनका अपनत्व रहेगा एवं जीवन के सुख दुःख में आपका नित्य सहयोग करते रहेंगे। इसके साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी वे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता अवश्य प्रदान करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा इससे वे युक्त रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से स्नेह एवं सम्मान प्रदान करेंगे एवं सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उनको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। आपके आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी परन्तु यदा कदा आपसी सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण उनमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थाई रहेगी। इसके साथ ही उनकी भाग्योन्नति में भी आप समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार से अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगे।

आपके लिए फाल्गुन मास, पंचमी, दशमी तथा पौर्ण मासी तिथियां, आश्लेषा नक्षत्र, वज्रयोग, चतुर्थ प्रहर, शुक्रवार तथा कुम्भ राशिस्थ चन्द्रमा सदैव अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 फरवरी से 14 मार्च के मध्य 5,10,15 तिथियों, आश्लेषा नक्षत्र वज्रयोग तथा विष्टिकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयदि अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार, चतुर्थ प्रहर तथा कुम्भ राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित ही रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति भी विशेष सावधानी रखनी चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, नौकरी या पदोन्नति में असफलता, व्यापार में हानि तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधान उत्पन्न हो रहे हों तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी जगदम्बा माता की आराधना करनी चाहिए तथा वृहस्पतिवार के नियमित रूप से उपवास रखने चाहिए। साथ ही सोना, पीत पुखराज, पीत वस्त्र, पीत पुष्प, पीत चन्दन, चने की दाल, हल्दी आदि वस्तुओं का श्रद्धापूर्वक किसी सुपात्र को दान देना चाहिए। इसके साथ ही वृहस्पति के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 16000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपकी मानसिक चिन्ताएं दूर होंगी तथा शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। इसके अतिरिक्त समस्त अशुभ प्रभाव समाप्त होंगे तथा शुभ प्रभावों की वृद्धि होकर सर्वत्र लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रों सः वृस्पतये नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं वृहस्पतये नमः।